REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 11 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2022

रवींद्रनाथ एवं जीन जैक रुसो का जीवनवृत्त एवं कृतित्व

Mousumi Mukherjee
Asst Prof. Dept of Math. Hindi Vidyapeeth B.Ed College,
Deoghar JH.

सारांश

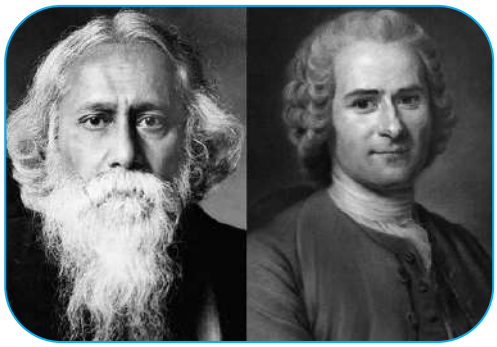

रवीन्द्रनाथ टैगोर का जन्म 6 मई 1861 ई0 को कोलकाता के जोड़ासांको ठाकुरवाड़ी में महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर के यहाँ हुआ। इनकी माता का नाम शारदा देवी था, जो बड़े ही सहजभाव की सहृदय महिला थीं। बचपन से ही इन्होंने अपने कर्मों से न केवल अपने कुल का अपितु अपने देश का भी नाम सम्पूर्ण विश्व में गौर्वान्वित किया। धर्मपरायणता, साहित्य में अभिरूचि तथा कलाप्रियता उन्हें विरासत में मिली। वे महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर के कनिष्ठ पुत्र थे। महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर अपने समय के प्रसिद्ध विद्वान एवं उत्साही समाज सुधारक थे। इन्होंने ही सर्वप्रथम 1863 ई0 में बालपुर के पास अपनी साधना के लिए एक आश्रम की स्थापना की। कालान्तर में यही स्थल रवीन्द्रनाथ टैगोर की कर्मस्थली बनी। यहीं पर गुरूदेव ने शांतिनिकेतन, विश्वभारती, श्रीनिकेतन जैसी विश्व प्रसद्धि संस्थाओं की स्थापना की।

प्रस्तावना

रवीन्द्रनाथ टैगोर की प्रारम्भिक शिक्षा नॉर्मल स्कूल, ओरियण्टल सेमिनॉर स्कूल और बंगाल अकादमी द्वारा संचालित एंग्लोइण्डियन स्कूल में पूर्ण हुई। इसके अनन्तर उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए इंग्लैण्ड गये, किन्तु शिक्षा पूर्ण के बिना ही वापस लौट आये। 9 दिसम्बर 1983 को मृणालिनी देवी के साथ इनका विवाह हुआ। ववाहिक जीवन में इन्होंने बड़ी ही सद्भावनापूर्ण अवस्था का परिचय देते हुए अपने दायित्वों का निर्वाह किया। इनकी कुल पाँच सन्ताने हुईं, जिनमें रथीन्द्रनाथ और शमीन्द्रनाथ नामक दो पुत्र तथा माधुरी लता, रेणुका लता एवं मीरा देवी नामक तीन पुत्रियाँ हुईं। साहित्य के क्षेत्र में इनका विशिष्ट योगदान रहा। शिक्षा, चित्रकला, नृत्य और संगीत के क्षेत्र में इन्होंने अत्यन्त सक्रिय भूमिका का निर्वाह किया। इन्होंने वर्ष 1933 के फरवरी माह में कोलकाता विश्वविद्यालय में 'शिक्षा के स्तर' विषय पर एक भाषण दिया था। उस समय वे वहाँ बाँग्ला भाषा के शिक्षक के रूप में कार्यरत थे उन्होंने अपने देश में शिक्षा और पाश्चात्य देशों में शिक्षा को लेकर दोनों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया।

व्यक्तित्व एवं कृतित्व

समृद्ध परिवार में जन्म लेने के कारण रवीन्द्रनाथ का बचपन बड़े आराम से बीता। पर विद्यालय का उनका अनुभव एक दु:स्वप्न के समान रहा जिसके कारण भविष्य में उन्होंने शिक्षा व्यवस्था में सुधार लाने के लिए अभूतपूर्व प्रयास किए। कुछ माह तक वे कलकत्ता में ओरिएण्टल सेमेनरी में पढ़े पर उन्हें यहाँ का वातावरण बिल्कुल पसंद नहीं आया। इसके उपरांत उनका प्रवेश साधारण स्कूल में कराया गया। यहाँ का अनुभव और कटु रहा। विद्यालयी जीवन के इन कटु अनुभवों को याद करते हुए उन्होंने बाद में लिखा जब मैं स्कूल भेजा गया तो, मैंने महसूस किया कि मेरी अपनी दुनिया मेरे सामने से हटा दी गई है। उसकी जगह लकड़ी के बेंच तथा सीधी दीवारं मुझे अपनी अंधी आखों से घूर रही है। इसीलिए जीवन पर्यन्त गुरूदेव विद्यालय को बच्चों की प्रकृति, रूचि एवं आवश्यकता के अनुरूप बनाने के प्रयास में लगे रहे।

रवीन्द्रनाथ टैगोर ने शिक्षा के क्षेत्र में विकास करने के लिए दर्शन को प्रमुख माध्यम के रूप में अपनाया। इनकी धारणा रही कि दर्शन के अभाव में शिक्षा ठीक उसी प्रकार से पूर्ण नहीं होती जिस प्रकार शिक्षा के अभाव दर्शन का ज्ञान अर्जित कर पाना दुरूह सा प्रतीत होता है। यदि दार्शनिक धारणाओं के आधार पर शैक्षिक पृष्ठभूमि का निर्धारण, उन्नयन एवं विकास के परम्परा को निर्धारित किया जाता है तो उस परिवेश से निर्मित शिक्षा की रूप-रेखा मानवता की उन्नायिका होते हुए देश, समाज व सामाजिकों के लिए अत्यन्त उपयोगी एवं उपयुक्त होती है। उनके अनुसार शिक्षा वही बेहतर है जो बालक व्यक्तित्व के सभी पक्षों का विकास करे। किसी विशेष पक्ष के विकास पर बल देने वाली शिक्षा सर्वश्रेष्ठ के रूप में नहीं जानी जाती हैं। शांतिनिकेतन के माध्यम से इन्होंने अपनी इसी भावना का विस्तृत उदगार लोकसम्मुख प्रस्तुत करने का सार्थक प्रयत्न किया। कोई शिक्षा जो बच्चे के सामने स्वयं अपने लिए इन खोजों के अवसर नहीं खोल देती, उसमं कहीं कुछ बुनियादी रूप से गड़बड़ है। कभी-कभी शिक्षा को औजार कहा जाता है और इसे कारखाने की प्रक्रिया की तरह समझा जाता है।

रवीन्द्रनाथ टैगोर ने शान्ति निकेतन की स्थापना शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिए किया था। इसकी स्थापना हेतु उन्हें विभिन्न सामाजिक तथ्यां से उत्प्रेरणा प्राप्त हुई। रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा प्रारम्भिक शिक्षा अर्जित करते हुए प्राप्त कटु अनुभवों, उनकी कल्पना, स्वच्छन्द एवं प्रशान्त अन्तर्वृत्ति, उनकी विदेश यात्राओं एवं बंगाल में राष्ट्रीयता के उन्मेष तथा राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली की कामना से प्रभावित होकर शान्ति निकेतन की स्थापना करना उनके लिए विशेष उपयोगी व महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ। ''शान्ति निकेतन स्कूल की स्थापना रवीन्द्रनाथ टैगोर की राष्ट्रीय भावना के उद्गार एवं अपने देश की सेवा करने के ढ़ंग से सम्बन्ध रखती है।

शिक्षा सम्बन्धी विचारों की दार्शनिक पृष्ठभूमि

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने भारतीय सामाजिक उत्थान के लिए मानवता के निरन्तर विकास की प्रक्रिया को अत्यन्त उपयुक्त एवं लोकोपकारी बनाया है उन्होंने भारतीय एवं पाश्चात्य संस्कृति के सम्मिलित रूप की अवधारणात्मक धारणा प्रस्तुत करते हुए साहित्य, कला और संस्कृति के उन्नति का पक्ष प्रबल किया है। चारित्रिक विकास के मूलभूत सोपान के रूप में कला और विज्ञान को एक-दूसरे से जोड़कर मानव के चिन्तनशीलता के क्रेन्द्रिय भूत तथ्यों को सृजन किया है उनके मूलवृत्ति आध्यात्मिकता से सम्पोषित मानवता के उन्नयन की प्रवृत्ति रही है। इसके लिए उन्होंने शिक्षा को माध्यम रूप में प्रयुक्त किया है। शिक्षा की गत्यात्मक रूपरेखा व विचारात्मक प्रभावशीलता उसके आध्यात्मिक क्रियमाण अवस्था का पोषण करती है और यह वृत्ति जब आंशिक रूप से विकास कर वृहत रूप में निज लक्ष्य का सुसंधान करने का कार्य करती है, तो उसकी सृजनशीलता आध्यात्मिक के पुट से

अच्छादित हो मानवता के विकास का आधार प्रस्तुत करती है। मानववादी चिन्तन की यहीं मूलवृत्ति गीताजंली के संदेशों में संनिहित हो। विश्वभारती के गुणग्राह्यता का प्रकीर्णन करते हुए तत्कालीन जीवन दर्शन की मूलभूत अवस्था का प्रदर्शन करती है। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने अपने जीवन दर्शन में लोकहितकारी शिक्षा की मूलभूत प्रवृत्तियों का संयुक्त रूप लोकाचार में प्रयुक्त किया है, जो आध्यात्मिक पृष्ठिभूमि के सुनिर्धारण में सहज योग देता है।

मानव धर्म

भारतीय शिक्षा मनीषियों ने अपने ज्ञान-विज्ञान और योगदर्शन के सहारे जहाँ एक ओर आधयात्मिक ज्ञानार्जन व विषय निषेधा कर आत्मीय श्रेष्ठता को अर्जित करने का श्रेष्ठ कार्य किया है वहीं दूसरी ओर उनका प्रमुख लक्ष्य देश और समाज का उत्थान एवं विकास रहा है। उन्होंने देश के विकास के लिए अपनी सम्पूर्ण शक्ति को नियोजित करते हुए समाज को सही दिशा और अच्छी गति प्रदान करने का कार्य किया है। उन्होंने सामाजिक आइने में अपनी तस्वीर देखते हुए राष्ट्र के विकास में जो सपना संजोया, वह निरन्तर मानवता के उद्‌भव और मानव जाति के सर्वांगीण विकास का मूल आधार है।

जीन जैक रूसो

रूसो का पूरा नाम जीन जैक रूसो है। जीन जैक रूसो एक प्रसिद्ध प्रकृतिवादी शिक्षा दार्शनिक थे। जीन जैक रूसो का जन्म 28 जून, 1712 ई0 को स्विटजरलैंड के जेनेवा नाम नगर में एक सम्मानित परिवार में हुआ था। उसे पिता एक फ्रांसिसी घड़ीसाज थे। जन्म के तुरन्त बाद रूसो की माता का देहान्त हो गया। उसकी देखभाल उसकी चाची ने की। बारह वर्ष की अवस्था में रूसो घर से भागकर छोटी-मोटी नौकरी करने लगे। कुछ दिनों तक मैडम वारेन्स के साथ सेवाएँ में रहे। बाद में थेरेस लीवेस्योर नामक महिला से विवाह कर वह पेरिस में आ बसे।

सामाजिक अनुबन्ध के विचारकों में रूसो का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। वह एक दार्शनिक, क्रान्तिकारी विचारों का प्रणेता, शिक्षाशास्त्री, आदर्शवादी, मानवतावादी, युग निर्माता तथा साहित्यकार था। उसने परम्परागत प्राचीन शासन के सम्पूर्ण ढ़ांचे को तोड़कर नवीन लोकतन्त्रीय व्यवस्था का मार्ग प्रशस्त किया।

रूसा हमेशा यही कहता था कि - मनुष्य स्वतंत्र पैदा होता है और सर्वत्र वह जंजीरों में जकड़ा हुआ है। उसके सामान्य इच्छा के सिद्धान्त तथा सावयवी समाज के सिद्धान्त को ही काफी महत्वपूर्ण माना गया है। रूसो को राजदर्शन का पिता भी कहा गया है। वह मानव की नैतिकता का समर्थक था।

जीवन और कार्य

जीन जैक्स रूसो का जन्म 1712 में जिनेवा नगर के आइजक नामक घड़ीसाज यहाँ हुआ था। जन्म के समय ही उसकी माता का देहावसान हो गया था। उसकी चाची ने यद्यपि उसका लालन-पालन किया था, तथापित वह उससे स्नेह नहीं करती थी। पिता के भी स्नेह से वंचित रूसो ने 14 वर्ष की अवस्था में गलत संगत में पड़कर चोरी करने और झूठ बोलने की कला भी सीखी थी। वहां से भागकर कुछ वर्ष पूर्व रूसो ने फ्रांस में अवारागर्दी करते हुए बुरी संगत में बिताये।

वह हमेशा वर्तमान में जीने वाला व्यक्ति बन गया था, जिसे अपने वर्तमान और भविष्य से कोई सरोकार न था। उसके कई महिलाओं से अनैतिक प्रेम सम्बन्ध रहे थे। मजदूरों की गन्दी बस्ती में रहकर उसने उमवारा, प्रताड़ित होने पर जीवन के हर पहलू को बारीकी से समझा।

यद्यपि उसने नियमित शिक्षा ग्रहण नहीं की थी, तथापि उसमें जन्मजात प्रतिभा अवश्य थी। 1749 में उसने एक निबन्ध प्रतियोगिता में भाग लिया। उसके मौलिक और सनसनीखेज विचारों के कारण उसे प्रतियोगिता का प्रथम पुरस्कार मिला था।

उस निबन्ध में उसने यह लिखा था कि – विज्ञान तथा कला की तथाकथित प्रगति से ही सभ्यता का नाश और चरित्र का पतन हुआ ह। यदि सरल, सुखी और सद्गुणी जीवन बिताना है, तो प्राकृतिक जीवन अपनाना चाहिए। इस निबन्ध में उसने यह भी लिखा कि हमें फिर से अज्ञान, निर्धनता और भोलापन दे दे, क्योंकि वे ही हमें सुखी बना सकते है।

विश्लेषण –

रूसो को सर्वप्रथम तब प्रसिद्धि प्राप्त हुई जब उसने डिजान एकेडमी की निबन्ध प्रतियोगिता में 1750 ई0 में "हेज दि प्रोग्रेस ऑफ साइन्सेज एण्ड आर्ट्स कन्ट्रिब्यूटेड टू करप्ट ऑर प्यूरिफाय मोरेलिटी?" (विज्ञान और कला की प्रगति का परिणाम नैतिकता में वृद्धि या गिरावट है?) रूसो का उत्तर था विज्ञान और कला की प्रगति से नैतिकता में गिरावट आई है। इस निबन्ध के कारण कल तक का भटकता इन्सान अनायास ही प्रसिद्ध हो गया। तीन वर्षों बाद पुन: इसी एकेडमी में "मानवों में असमानता के कारण तथा यह प्राकृतिक नियम द्वारा स्वीकृत है या नहीं?" (ह्वाट इज दि ऑरिजिन ऑफ इनइक्वेलिटी एमंग मेन एण्ड इज इट आउथराइजिड बाय नेचुरल लॉ?) पर दूसरा निबन्ध सम्पूर्ण यूरोप में प्रसिद्ध हो गया। इस उपन्यास से वह एक महान प्रकृतिवादी दार्शनिक के रूप में स्थापित हो गया जिसने तत्कालीन सामाजिक संस्थाओं का विरोध किया।

रूसो अपनी महत्वपूर्ण रचनाएं : 'दि न्यू हेल्वायज', 'दि एमिल' तथा 'दि कॉनफेसन्श' के कारण एक महान दार्शनिक के रूप में प्रतिष्ठित तो हुआ पर उसके जीवन के अन्तिम दिन कष्टों में बीते। वह अपमानित हो इंग्लैंड, जेनेवा तथा फ्रांस में भागता फिरता रहा। रूसो की मृत्यु 1778 ई0 में फ्रांस में हुई। 1789 ई0 में फ्रांस की क्रांति प्रारम्भ हुई। फ्रांस की क्रांति का एक महत्वपूर्ण कारक रूसो के क्रांतिकारी विचार थे। नेपोलियन ने ठीक ही कहा था: "रूसो के बिना फ्रांस की क्रांति संभव नहीं थी।" रूसो को न केवल एक दार्शनिक के रूप में ही वरन् महान क्रांतिकारी के रूप में भी प्रतिष्ठा प्राप्त हुई।

रूसो की प्रमुख रचनाएं

रूसो की प्रमुख रचनायें हैं:-

1. दि प्रोगेस ऑफ साइन्सेज एण्ड आर्ट्स
2. दि ऑरिजिन ऑफ इनइक्वेलिटी एमंग मेन
3. डिस्कोर्स ऑन पोलिटिकल इकोनॉमी
4. दि न्यू हेल्वायज
5. दि सोशल कॉन्ट्रेक्ट
6. दि एमिल
7. कन्सीडरेसन ऑन दि गवर्नमेन्ट ऑफ पोलैण्ड
8. दि कॉनफेसन्श'

शिक्षा की दृष्टि से रूसो की सर्वप्रसिद्ध रचना एमिल है जिसमें उसने एमिल नाम के एक काल्पनिक बालक को शिक्षा देने की प्रक्रिया का वर्णन किया है। रूसो का शिक्षा सम्बन्धी विचार एमिल तक ही सीमित नहीं है पर रूसो का मूल्यांकन एमिल के आधार पर ही होता है।

शिक्षा की दृष्टि से 'दि न्यू हेल्वायज' (1761 ई0) भी महत्वपूर्ण है। इसमें उन्होंने गृह-शिक्षा का वर्णन किया है। इस पुस्तक में रूसो शिशु के प्रति माता के दायित्वों का वर्णन करते हुए उसे प्रारम्भिक काल में सर्वाधिक महत्वपूर्ण अध्यापक कहा।

निष्कर्ष –

1901 में बोलपुर के समीप रवीन्द्रनाथ टैगोर ने ब्रह्मचर्य आश्रम के नाम से एक विद्यालय की स्थापना की, जिसे बाद में शान्तिनिकेतन क नाम से पुकारा गया। तत्पश्चात उन्होंने अपने को पूर्णत: शिक्षा साहित्य एवं समाज की सेवा में अर्पित कर दिया। गुरूदेव की सक्रिय राजनीति में रूचि नहीं थी, पर जब अंग्रेजों ने अन्याय पूर्वक बंगाल का विभाजन किया तो गुरूदेव ने इसके विरूद्ध चलने वाले स्वदेशी आंदोलन का नेतृत्व किया। वे कलकत्ता की गलियों में एकता, स्वतंत्रता एवं बंधुत्व का गीत गाते हुए निकल पड़े। बंगाल का विभाजन रद्द हुआ।

कवि, साहित्यकार, अध्यापक एवं समाजसेवी के रूप में रवीन्द्रनाथ टैगोर की ख्याति बढ़ती गयी। 1913 में उन्हें गीतांजली नामक काव्य पुस्तक पर साहित्य का विश्वप्रसिद्ध नोबेल पुरस्कार मिला। वे एशिया के प्रथम व्यक्ति थे, जिन्हें यह विश्व प्रतिष्ठित पुरस्कार मिला था। अब पूरा विश्व उन्हें विश्वकवि के रूप में देखने लगा। उन्होंने अमेरिका, एशिया एवं यूरोप के अनेक देशों का भ्रमण किया। 1915 में अंग्रेजी सरकार ने उन्हें नाइटहुड की उपाधि प्रदान की।

1919 में जब जालियाँवाला बाग में हजारों निहत्थे भारतीयों का औपनिवेशिक सरकार द्वारा हत्या की गई, तो रवीन्द्रनाथ टैगोर ने नाइटहुड की उपाधि लौटा दी और वे पीड़ित भारतीयों के साथ खड़े हो गये। इस प्रकार रवीन्द्रनाथ टैगोर ने देश को राजनीतिक नेतृत्व भी प्रदान किया। सन् 1941 में इस महान कवि एवं ऋषि तुल्य गुरूदेव का देहावसान हो गया। उनकी मृत्यु पर गुरूदेव के प्रशंसक महात्मा गाँधी ने कहा था गुरूदेव के पार्थिव शरीर की राख पृथ्वी में मिल गई है, लेकिन उनके व्यक्तित्व पर का प्रकाश सूर्य की ही तरह तब तक बना रहेगा जब तक पृथ्वी पर जीवन है गुरूदेव एक महान अध्यापक ही नहीं थे वरन् एक ऋषि थे।

संदर्भ –

- अब्दुल कलाम आजाद (1951) : स्पीच एट विश्वभारती, उद्घाटन भाषण, विश्वभारती न्यूज।
- अग्रवाल, जे. सी. (1994) : लैण्डमार्क्स इन दि हिस्ट्री ऑफ मार्डन इण्डियन एजूकेशन, नई दिल्ली, विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा. लिमिटेड, एस0 1979 : यूनिवर्सिटी विदाउट वाल्स, विकास पब्लिशिंग हाउस, न्यू दिल्ली।
- उप्पल, श्वेता (2005) : जरनल ऑफ वेल्यू एजूकेशन, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई. आर.टी.), वाल्यूम-4, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली-110016
- कृष्णमूर्ति जे.(2006): शिक्षा क्या है?, अनुवादक-वैद्य विनय कुमार, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट दिल्ली-110006 संस्करण 2006,
- डॉ0 सुबोध अदावाल (1957): भारतीय शिक्षा सिद्धान्त, गर्ग बदर्श, 1, स्टरारोर्ड, प्रयाग